[This question paper contains 4 printed pages.]

Shyama Prasad Mukherji College LIBRARY New Delhi

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3062 **A**

Unique Paper Code : 12053406

Name of the Paper : Bhasha Dakshta : Samajh aur Sambhashan

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

P.T.O.

1. भाषा दक्षता के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए श्रवण और वाचन दक्षता की प्रक्रिया को समझाइए। (12)

अथवा

विभिन्न भाषायी कौशलों का परिचय देते हुए लेखन कौशल की प्रक्रिया को सोदाहरण समझाइए।

2. भाषायी संस्कृतिक के संदर्भ में आयु और लिंग की भूमिका को निर्धारित कीजिए। (12)

अथवा

भाषायी दक्षता के विकास में भाषिक प्रयोग' और 'शैली' की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

3. भाषायी दक्षता के विकास में 'स्वाध्याय' और 'उद्देश्य केंद्रित पठन' की भूमिका पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

सामान्य और तकनीकी शब्दों का परिचय देते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

4. किसी एक फिल्म की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

भाषायी दक्षता में पल्लवन का महत्त्व बताते हुए, 'का वर्षा जब कृषि सुखान" विषय का पल्लवन कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (9×3=27)

(क) शुद्ध उच्चारण का महत्व

(ख) भाषिक संरचना

(ग) समूह चर्चा

(घ) भाषा और वर्ग

This question paper contains 2 printed pages.]

Prasad Mukherji College LIBRARY New Delhi

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3063 **A**

Unique Paper Code : 12053407

Name of the Paper : Bhasha aur Samaj

Name of the Course : **Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. भाषा और समाज के अंतर्संबंध को सविस्तार समझाइए । (15)

अथवा

समाजभाषा विज्ञान से क्या अभिप्राय है समाज भाषा विज्ञान के स्वरूप पर प्रकाश डालिए ।

2. भाषा और जातीयता के अंत:संबध को स्पष्ट कीजिए । (15)

अथवा

P.T.O.

बहुभाषिकता से आप क्या समझते हैं? भारत में बहुभाषिकता के महत्व को समझाइए ।

3. शिक्षित एवं अशिक्षित वर्ग की भाषा में अन्तर बताते हुए समाज के विभिन्न वर्गों के भाषा व्यवहार पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

भाषा और संस्कृति के अंत: संबंध को रेखांकित कीजिए ।

4. भाषा सर्वेक्षण से आप क्या समझते हैं? भाषा सर्वेक्षण की प्रविधि पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

भाषा के नवीन प्रयोग का संबंध आधुनिकीकरण से है । इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए : (15)

(क) भाषा का समाजशास्त्र

(ख) पिज़िन भाषा

(ग) भाषाई अस्मिता

(घ) भाषा नमूनों का विश्लेषण

[This question paper contains 2 printed pages.]

Prasad Mukherji College LIBRARY New Delhi

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3294 **A**

Unique Paper Code : 12051401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra
(भारतीय काव्यशास्त्र)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (LOCF)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त परिचय देते हुए आचार्य विश्वनाथ के योगदान पर प्रकाश डालिए।

अथवा

काव्य हेतु से क्या तात्पर्य है ? भारतीय आचार्यों द्वारा प्रस्तुत काव्य हेतुओं पर विचार कीजिए। (12)

P.T.O.

2. रस का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

अथवा

शब्द शक्ति किसे कहते हैं ? लक्षणा शब्द शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके भेदों का उदाहरण सहित निरूपण कीजिए। (12)

3. महाकाव्य **अथवा** खंडकाव्य का तात्विक विवेचन कीजिए।

4. (क) किन्हीं **तीन** अलंकारों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

अनुप्रास, विभावना, श्लेष, यमक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास

(ख) किन्हीं **तीन** छंदों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

भुजंगप्रयात, शार्दूलविक्रीड़ित, चौपाई, रोला, दोहा, छप्पय

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (7×3=21)

(क) ओज गुण

(ख) करुण रस

(ग) रूपक और उपमा में अंतर

(घ) मम्मट के अनुसार काव्य लक्षण

(ङ) काव्य दोष के पाँच प्रकार

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No..............

Shyama Prasad Mukherji College
LIBRARY
New Delhi

Sr. No. of Question Paper : 3461 **A**

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिन्दी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) अगर मैं तुमको

ललाती सांझ के नभ की अकेली तारिका

अब नहीं कहता,

या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुँई,

टटकी कली चंपे की,

P.T.O.

वगैरह, तो

नहीं, कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है

या कि मेरा प्यार मैला है।

बल्कि केवल यही : ये उपमान मैले हो गए हैं।

देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।

अथवा

क्या अन्तरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें

क्या दीमकों ने खा लिया है

सारी रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़ के नीचे रब गए हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं

सारे मदरसों की इमारतें

(ख) आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,

शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

अथवा

एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ- -

'यह तीसरा आदमी कौन है?'

मेरे देश की संसद मौन है।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **दो** का रचना-कौशल की दृष्टि से विश्लेषण कीजिए : (7.5×2=15)

(क) कौन है वह व्यक्ति जिसको चाहिए न समाज?

कौन है वह एक जिसको नहीं पड़ता दूसरे से काज?

चाहिए किसको नहीं सहयोग?

चाहिए किसको नहीं सहवास?

कौन चाहेगा कि उसका शून्य में टकराय यह उच्छ्वास?

हो गया हूँ मैं नहीं पाषाण

जिसको डाल दे कोई कहीं भी

करेगा वह कभी कुछ न विरोध। **(मूल – संवेदना)**

(ख) जब वह बहुत ज्यादा थक जाती है

तो उठा लेती है सुई और तागा

मैंने देखा है कि जब सब सो जाते हैं

तो सुई चलाने वाले उसके हाथ

देर रात तक

समय को धीरे-धीरे सिलते हैं

जैसे वह मेरा फटा हुआ कुर्ता हो

(काव्य – सौंदर्य)

(ग) राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत-भाग्य-विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है।

मखमल टमटम बल्लम तुरही

पगड़ी छत्र चवंर के साथ

तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर

जय-जय कौन कराता है । **(काव्य-बिंब)**

3. नागार्जुन की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

अज्ञेय की कविता का मूत्र स्वर स्पष्ट कीजिए।

4. 'रामदास' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

राजेश जोशी की कविताओं में व्यक्त स्वप्न और यथार्थ का चित्रण कीजिए।

5. भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

5. भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3499 **A**

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिंदी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (H) – Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) "हमारे शिक्षालयों में नरमी को घुसने ही नहीं दिया जाता । वहां स्थाई रूप से मार्शल-लॉ का व्यवहार होता है । कचहरी में पैसे का राज है, हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर, कहीं निर्दय देर में आइए तो जुर्माना; ना आइए तो जुर्माना; सबक ना याद हो तो जुर्माना; किताबें न खरीद सकिए

P.T.O.

तो जुर्माना; कोई अपराध हो जाए तो जुर्माना; शिक्षालय क्या है, जुर्मानालय है। यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है, जिसकी तारीफों के पुल बाँधे जाते हैं। यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देनेवाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले, पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेच देनेवाले छात्र निकलते हैं, तो आश्चर्य क्या है ?"

अथवा

नौ बजे कथा आरंभ हुई। यह देवी-देवताओं और अवतारों की कथा न थी। ब्रह्म-ऋषियों के तप और तेज का वृतांत न था, क्षत्रियों के शौर्य और दान की गाथा न थी। यह उस पुरुष का पावन चरित्र था जिसके यहां मन और कर्म की शुद्धता ही धर्म का मूल तत्व है। वही ऊंचा है, जिसका मन शुद्ध है; वही नीचा है, जिसका मन अशुद्ध है- जिसने वर्ण का स्वांग रचकर समाज के एक अंग को मदान्ध और दूसरे को म्लेच्छ नहीं बनाया ? किसी के लिए उन्नति या उद्धार का द्वार नहीं बंद किया- एक के माथे पर बड़प्पन का तिलक और दूसरे के माथे पर नीचता का कलंक नहीं लगाया। इस चरित्र में आत्मोनन्नति का एक सजीव संदेश था, जिसे सुनकर दर्शकों को ऐसा प्रतीत होता था, मानो उनकी आत्मा के बंधन खुल गए हैं, संसार पवित्र और सुंदर हो गया है।

(ख) संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है! प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनःप्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है - प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मनःप्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दोहराता है - यही मनुष्य का जीवन है। जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतिक है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है - विवश है। कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है। फिर पुण्य और पाप कैसा ?

अथवा

साथ रहने की यंत्रणा भी बड़ी विकट थी और अलगाव का त्रास भी। अलग रहकर भी वह ठंडा युद्ध कुछ समय तक जारी ही नहीं रहा, बल्कि अनजाने ही अपनी जीत की संभावनाओं को एक नया संबल मिल गया था कि अलग रहकर ही शायद सही तरीके से महसूस होगा कि सामनेवाले को खोकर क्या कुछ अमूल्य खो दिया है। और वकील चाचा की हर खबर, हर बात इन संभावनाओं को बनाती - बिगड़ती रही थी।

सामने वाले को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा उसने उसे खुद ही पराजित कर दिया। सामनेवाला व्यक्ति तो पता नहीं कब परिदृश्य से हट भी गया और वह आज तक उसी मुद्रा में, उसी स्थिति में खड़ी है - सांस रोके, दम साधे, घुटी - घुटी और कृत्रिम!

P.T.O.

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखिए :

(क) यशपाल

(ख) श्रीलाल शुक्ल

(ग) मन्नू भंडारी

(घ) मैत्रेयी पुष्पा (7.5×2=5)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित कथाओं का तामा-बाना है। इस कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए। (15)

अथवा

'कल की सुखदा और आज की सुखदा में कितना अंतर हो गया है। भोग-विलास पर प्राण देने वाली रमणी आज सेवा और दया की मूर्ति बनी हुई है।' इस कथन के आधार पर सुखदा का चरित्रांकन उदाहरण सहित कीजिए।

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास के कथ्य-शिल्प पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'चित्रलेखा' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

5. 'आपका बंटी' उपन्यास नारी मन की अनेक परतों को खोलता है। स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा-शैली पर विचार कीजिए।

(3500)

B.A (Hons.) Hindi, N Sem, June 2022

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3009 **A**

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **BA (H) Hindi – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Shyama Prasad Mukherji College LIBRARY

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10+10+10)

(क) नीति-शास्त्र और साहित्य-शास्त्र का लक्ष्य एक ही है, केवल उपदेश की विधि में अंतर है। नीति-शास्त्र तर्कों और उपदेशों के द्वारा बुद्धि और मन पर प्रभाव डालने का यत्न करता है, साहित्य ने अपने लिए मानसिक अवस्थाओं और भावों का क्षेत्र चुन लिया है। हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में

पहुँचकर साहित्य-सृजन की प्रेरणा देती हैं। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति जागृत न हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है। वह साहित्य कहाने का अधिकारी नहीं। पुराने जमाने में समाज की लगाम मजहब के हाथ में थी। मनुष्य की आध्यात्मिक और नैतिक सभ्यता का आधार धार्मिक आदेश था और वह भय या प्रलोभन से काम लेता था। पुण्य-पाप के मसले उसके साधन थे। अब साहित्य ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया है और उसका साधन सौंदर्य-प्रेम है। वह मनुष्य में इसी सौंदर्य-प्रेम को जगाने का यत्न करता है।

अथवा

वर्तमान युग की ऐसी प्रवृत्ति है। जब मानसिक बंधनों की बाधा घातक समझ पड़ती है और इन बंधनों को कृत्रिम और अवास्तविक माना जाने लगता है। यथार्थवाद क्षुद्रों का ही नहीं, अपितु महानों का भी है। वस्तुत: यथार्थवाद का मूल भाव है- वेदना। जब सामूहिक चेतना छिन्न-भिन्न होकर पीड़ित होने लगती है, तब वेदना की विवृत्ति आवश्यक हो जाती है। कुछ लोग कहते हैं- साहित्यकार को आदर्शवादी होना चाहिए और सिद्धांत से ही

आदर्शवादी धार्मिक प्रवचन कर्ता बन जाता है। वह समाज को कैसा होना चाहिए, यही आदेश करता है। और यथार्थवादी सिद्धांत से ही इतिहासकार से अधिक कुछ नहीं ठहरता, क्योंकि यथार्थवाद इतिहास की संपत्ति है। वह चित्रित करता है कि समाज कैसा है या था, किन्तु साहित्यकार न तो इतिहासकर्ता है और न धर्म शास्त्र प्रणेता। इन दोनों के कर्तव्य स्वतंत्र हैं। साहित्य इन दोनों की कमी को पूरा करने का काम करता है। साहित्य, समय की वास्तविक स्थिति क्या है, इसको दिखाते हुए भी उसमें आदर्शवाद का सामंजस्य स्थिर करता है। दुःख-दग्ध जगत और आनंदपूर्ण स्वर्ग का एकीकरण साहित्य है, इसलिए असत्य अघटित घटना पर कल्पना को वाणी महत्वपूर्ण स्थान देती है, जो निजी सौंदर्य के कारण सत्य-पद पर प्रतिष्ठित होती है। उसमें विश्वमंगल की भावना ओत-प्रोत रहती है।

(ख) तुलसी के राम उनकी आशाओं के केंद्र ही नहीं हैं, मनुष्यों में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्राह्मण में वह भले ही निर्गुण निर्विकार हों, मानव रूप में वह किसी देश-काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही गतिशील प्रतिबिंब हो सकते हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृ भक्ति, भातृ प्रेम आदि पर बार-बार लिखा गया है, लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की

रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निःस्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक संबंधों पर ही निर्भर नहीं है, उसका आधार व्यापक सामाजिक संबंध हैं। समाज में चाहे दुखी-दीनों और निःस्वार्थ सेवकों को कोई न पूछे, राम उन्हें पूछने वाले हैं। तुलसी के राम न्याय-अन्याय के संघर्ष में तटस्थ नहीं हैं। वह न्याय का सक्रिय पक्ष लेते हैं। लक्ष्मण के मुकाबले वह ज्यादा धैर्य दिखाते हैं, लेकिन उनके धैर्य की एक सीमा है। सीमा पार होने पर वह शस्त्र उठाने में जरा भी आगा-पीछा नहीं करते। यह गुण हमारी जनता का विशेष गुण है। वह बड़ी सहनशील है लेकिन एक सीमा तक ही।

अथवा

प्रयोग का हमारा कोई वाद नहीं है, इसको और भी स्पष्ट करने के लिए एक बात हम और कहें। प्रयोग निरंतर होते आये हैं और प्रयोगों के द्वारा ही कविता या कोई भी कला, कोई भी रचनात्मक कार्य, आगे बढ़ सका है। जो कहता है कि मैंने जीवन-भर कोई प्रयोंग नहीं किया, वह वास्तव में यही कहता है कि मैंने जीवन भर कोई रचनात्मक कार्य करना नहीं चाहा;

ऐसा व्यक्ति अगर सच कहता है तो यही पाया जायेगा कि उसकी 'कविता' कविता नहीं है; उसमें रचनात्मकता नहीं है, वह कला नहीं शिल्प है, हस्तलाघव है। जो उसी को कविता मानना चाहते हैं, उनसे हमारा झगड़ा नहीं है। झगड़ा हो ही नहीं सकता। क्योंकि हमारी भाषाएं भिन्न हैं, और झगड़े के लिए भी साधारणीकरण अनिवार्य है। लेकिन इस आग्रह पर स्थिर रहते हुए भी हमें यह भी कहना चाहिए कि केवल प्रयोगशीलता ही किसी रचना को काव्य नहीं बना देती। हमारे प्रयोग का पाठक या सहृदय के लिए कोई महत्त्व नहीं है, महत्त्व उस सत्य का है जो प्रयोग द्वारा हमें प्राप्त हो। 'हमने सैकड़ों प्रयोग किये हैं' यह दावा लेकर हम पाठक के सामने नहीं जा सकते, जब तक हम यह न कह सकते हों कि 'देखिए हमने प्रयोग द्वारा यह पाया है।' प्रयोगों का महत्त्व कर्ता के लिए चाहे जितना हो, व सत्य की खोज की लगन उसमें चाहे जितनी उत्कट हो; सहृदय के निकट वह सब अप्रासंगिक है।

(ग) अभिव्यक्ति का संघर्ष दीर्घ होता है। कला का यह तीसरा क्षण दीर्घ होता है। उस संघर्ष में अभिव्यक्ति के स्तर पर आते-आते, हमारे मनोमय तत्त्व-रूप बदलने लगते हैं। होता यह है कि उस संघर्ष के दौरान में भाषा के भीतर अवस्थित ज्ञान-परंपरा और भाव-परंपरा के कारण, जो पहले से ही शब्द-संयोग बने हुए

हैं, उन शब्द संयोगों के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े जो अर्थानुषंगों हैं, उन अर्थानुषंगों के प्रभाव में आकर, समशील-समरूप अर्थानुषंगो को आत्मसात कर, मनोमय रूप- तत्त्व अपने को और पुष्ट करते हैं। फलत: वे इस हद तक बदले हैं। जब वे अपने खास साइज और अपनी खास काट की अभिव्यक्ति पा लेते हैं, तब उनके तत्त्व और रूप पहले से बहुत कुछ बदले हुए होते हैं। सामाजिक सम्पदा होने के कारण भाषा मनोनय रूप-तत्त्वों को उनके प्रकट होने के दौरान घटा-बढ़ा देती है और अनजाने ढंग से उनमें नए रूप-तत्त्व ला देती है। साथ ही यह अभिव्यक्ति-संघर्ष भाषा को कुछ बदल देता है, उसे नवीन शब्द-संयोग, नवीन अर्थवत्ता और नयी भंगिमाएँ और व्यंजनाएँ देता है। प्रकार कलाकार भाषा का भी निर्माण करता है। अभिव्यक्ति समाप्त होते ही, उसके संघर्ष का अंत होते ही, कला का तीसरा क्षण भी समाप्त होता है।

अथवा

लेकिन कहानी में मैं जब सार्थकता की बात कहता हूँ तो इसका यह अर्थ है कि कहानी हमारे जीवन की छोटी से छोटी घटना में भी अर्थ खोज लेती है या उसे अर्थ प्रदान कर देती है। इस युग में जब कि 'निरर्थकता' की भावना व्यापक रूप से फैली हुई है और एक वर्ग के लोगों द्वारा फैलाई भी जा रही है, कहानी

जैसे छोटे गद्य-रूप से सबसे पहले सार्थकता की मांग की जा सकती है। यह नहीं है कि छोटी-छोटी बातें ही अर्थहीन प्रतीत होती हों कुछ लोगों को अपना सारा जीवन ही अर्थहीन मालूम होता है और कुछ को तो दुनिया का सारा कारोबार भी व्यर्थ लगता है। परन्तु लघुता में निरर्थकता का खतरा सबसे अधिक है। कहानी की सृष्टि इसी लघुता को सार्थकता प्रदान करने के लिए हुई थी। लोगों की यह धारणा है कि कहानी जीवन के एक टुकड़े को लेकर चलती है, इसलिए उसमें कोई बड़ी बात कही ही नहीं जा सकती। कहानी जीवन के टुकड़ों में निहित 'अन्तर्विरोध', 'द्वंद्व', 'संक्रान्ति' अथवा क्राइसिस को पकड़ने की कोशिश करती है और ठीक ढंग से पकड़ में आ जाने पर यह खंडगत अन्तर्विरोध की वृहद् अन्तर्विरोध के किसी न किसी पहलू का आभास दे जाता है।

2. नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में भारतेन्दु युगीन हिंदी आलोचना पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी आलोचना के विकास पर प्रकाश डालिए।

3. 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' के आधार पर आचार्य रामचंद्र

शुक्ल की आलोचना की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'दूसरा सप्तक की भूमिका' में निहित अज्ञेय के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. हिंदी आलोचना के विकास में नामवर सिंह के योगदान का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

'रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3009 **A**

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **BA (H) Hindi – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Shyama Prasad Mukherji College LIBRARY

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10+10+10)

(क) नीति-शास्त्र और साहित्य-शास्त्र का लक्ष्य एक ही है, केवल उपदेश की विधि में अंतर है। नीति-शास्त्र तर्कों और उपदेशों के द्वारा बुद्धि और मन पर प्रभाव डालने का यत्न करता है, साहित्य ने अपने लिए मानसिक अवस्थाओं और भावों का क्षेत्र चुन लिया है। हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में

पहुँचकर साहित्य-सृजन की प्रेरणा देती हैं। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति जागृत न हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है। वह साहित्य कहाने का अधिकारी नहीं। पुराने जमाने में समाज की लगाम मजहब के हाथ में थी। मनुष्य की आध्यात्मिक और नैतिक सभ्यता का आधार धार्मिक आदेश था और वह भय या प्रलोभन से काम लेता था। पुण्य-पाप के मसले उसके साधन थे। अब साहित्य ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया है और उसका साधन सौंदर्य-प्रेम है। वह मनुष्य में इसी सौंदर्य-प्रेम को जगाने का यत्न करता है।

अथवा

वर्तमान युग की ऐसी प्रवृत्ति है। जब मानसिक बंधनों की बाधा घातक समझ पड़ती है और इन बंधनों को कृत्रिम और अवास्तविक माना जाने लगता है। यथार्थवाद क्षुद्रों का ही नहीं, अपितु महानों का भी है। वस्तुत: यथार्थवाद का मूल भाव है- वेदना। जब सामूहिक चेतना छिन्न-भिन्न होकर पीड़ित होने लगती है, तब वेदना की विवृत्ति आवश्यक हो जाती है। कुछ लोग कहते हैं- साहित्यकार को आदर्शवादी होना चाहिए और सिद्धांत से ही

आदर्शवादी धार्मिक प्रवचन कर्ता बन जाता है। वह समाज को कैसा होना चाहिए, यही आदेश करता है। और यथार्थवादी सिद्धांत से ही इतिहासकार से अधिक कुछ नहीं ठहरता, क्योंकि यथार्थवाद इतिहास की संपत्ति है। वह चित्रित करता है कि समाज कैसा है या था, किन्तु साहित्यकार न तो इतिहासकर्ता है और न धर्म शास्त्र प्रणेता। इन दोनों के कर्तव्य स्वतंत्र हैं। साहित्य इन दोनों की कमी को पूरा करने का काम करता है। साहित्य, समय की वास्तविक स्थिति क्या है, इसको दिखाते हुए भी उसमें आदर्शवाद का सामंजस्य स्थिर करता है। दुःख-दग्ध जगत और आनंदपूर्ण स्वर्ग का एकीकरण साहित्य है, इसलिए असत्य अघटित घटना पर कल्पना को वाणी महत्वपूर्ण स्थान देती है, जो निजी सौंदर्य के कारण सत्य-पद पर प्रतिष्ठित होती है। उसमें विश्वमंगल की भावना ओत-प्रोत रहती है।

(ख) तुलसी के राम उनकी आशाओं के केंद्र ही नहीं हैं, मनुष्यों में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्राह्मण में वह भले ही निर्गुण निर्विकार हों, मानव रूप में वह किसी देश-काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही गतिशील प्रतिबिंब हो सकते हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृ भक्ति, भातृ प्रेम आदि पर बार-बार लिखा गया है, लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की

रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निःस्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक संबंधों पर ही निर्भर नहीं है, उसका आधार व्यापक सामाजिक संबंध हैं। समाज में चाहे दुखी-दीनों और निःस्वार्थ सेवकों को कोई न पूछे, राम उन्हें पूछने वाले हैं। तुलसी के राम न्याय-अन्याय के संघर्ष में तटस्थ नहीं हैं। वह न्याय का सक्रिय पक्ष लेते हैं। लक्ष्मण के मुकाबले वह ज्यादा धैर्य दिखाते हैं, लेकिन उनके धैर्य की एक सीमा है। सीमा पार होने पर वह शस्त्र उठाने में जरा भी आगा-पीछा नहीं करते। यह गुण हमारी जनता का विशेष गुण है। वह बड़ी सहनशील है लेकिन एक सीमा तक ही।

अथवा

प्रयोग का हमारा कोई वाद नहीं है, इसको और भी स्पष्ट करने के लिए एक बात हम और कहें। प्रयोग निरंतर होते आये हैं और प्रयोगों के द्वारा ही कविता या कोई भी कला, कोई भी रचनात्मक कार्य, आगे बढ़ सका है। जो कहता है कि मैंने जीवन-भर कोई प्रयोंग नहीं किया, वह वास्तव में यही कहता है कि मैंने जीवन भर कोई रचनात्मक कार्य करना नहीं चाहा;

ऐसा व्यक्ति अगर सच कहता है तो यही पाया जायेगा कि उसकी 'कविता' कविता नहीं है; उसमें रचनात्मकता नहीं है, वह कला नहीं शिल्प है, हस्तलाघव है। जो उसी को कविता मानना चाहते हैं, उनसे हमारा झगड़ा नहीं है। झगड़ा हो ही नहीं सकता। क्योंकि हमारी भाषाएं भिन्न हैं, और झगड़े के लिए भी साधारणीकरण अनिवार्य है। लेकिन इस आग्रह पर स्थिर रहते हुए भी हमें यह भी कहना चाहिए कि केवल प्रयोगशीलता ही किसी रचना को काव्य नहीं बना देती। हमारे प्रयोग का पाठक या सहृदय के लिए कोई महत्त्व नहीं है, महत्त्व उस सत्य का है जो प्रयोग द्वारा हमें प्राप्त हो। 'हमने सैकड़ों प्रयोग किये हैं' यह दावा लेकर हम पाठक के सामने नहीं जा सकते, जब तक हम यह न कह सकते हों कि 'देखिए हमने प्रयोग द्वारा यह पाया है।' प्रयोगों का महत्त्व कर्ता के लिए चाहे जितना हो, व सत्य की खोज की लगन उसमें चाहे जितनी उत्कट हो; सहृदय के निकट वह सब अप्रासंगिक है।

(ग) अभिव्यक्ति का संघर्ष दीर्घ होता है। कला का यह तीसरा क्षण दीर्घ होता है। उस संघर्ष में अभिव्यक्ति के स्तर पर आते-आते, हमारे मनोमय तत्त्व-रूप बदलने लगते हैं। होता यह है कि उस संघर्ष के दौरान में भाषा के भीतर अवस्थित ज्ञान-परंपरा और भाव-परंपरा के कारण, जो पहले से ही शब्द-संयोग बने हुए

हैं, उन शब्द संयोगों के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े जो अर्थानुषंगों हैं, उन अर्थानुषंगों के प्रभाव में आकर, समशील-समरूप अर्थानुषंगो को आत्मसात कर, मनोमय रूप- तत्त्व अपने को और पुष्ट करते हैं। फलत: वे इस हद तक बदले हैं। जब वे अपने खास साइज और अपनी खास काट की अभिव्यक्ति पा लेते हैं, तब उनके तत्त्व और रूप पहले से बहुत कुछ बदले हुए होते हैं। सामाजिक सम्पदा होने के कारण भाषा मनोनय रूप-तत्त्वों को उनके प्रकट होने के दौरान घटा-बढ़ा देती है और अनजाने ढंग से उनमें नए रूप-तत्त्व ला देती है। साथ ही यह अभिव्यक्ति-संघर्ष भाषा को कुछ बदल देता है, उसे नवीन शब्द-संयोग, नवीन अर्थवत्ता और नयी भंगिमाएँ और व्यंजनाएँ देता है। प्रकार कलाकार भाषा का भी निर्माण करता है। अभिव्यक्ति समाप्त होते ही, उसके संघर्ष का अंत होते ही, कला का तीसरा क्षण भी समाप्त होता है।

अथवा

लेकिन कहानी में मैं जब सार्थकता की बात कहता हूँ तो इसका यह अर्थ है कि कहानी हमारे जीवन की छोटी से छोटी घटना में भी अर्थ खोज लेती है या उसे अर्थ प्रदान कर देती है। इस युग में जब कि 'निरर्थकता' की भावना व्यापक रूप से फैली हुई है और एक वर्ग के लोगों द्वारा फैलाई भी जा रही है, कहानी

जैसे छोटे गद्य-रूप से सबसे पहले सार्थकता की मांग की जा सकती है। यह नहीं है कि छोटी-छोटी बातें ही अर्थहीन प्रतीत होती हों कुछ लोगों को अपना सारा जीवन ही अर्थहीन मालूम होता है और कुछ को तो दुनिया का सारा कारोबार भी व्यर्थ लगता है। परन्तु लघुता में निरर्थकता का खतरा सबसे अधिक है। कहानी की सृष्टि इसी लघुता को सार्थकता प्रदान करने के लिए हुई थी। लोगों की यह धारणा है कि कहानी जीवन के एक टुकड़े को लेकर चलती है, इसलिए उसमें कोई बड़ी बात कही ही नहीं जा सकती। कहानी जीवन के टुकड़ों में निहित 'अन्तर्विरोध', 'द्वंद्व', 'संक्रान्ति' अथवा क्राइसिस को पकड़ने की कोशिश करती है और ठीक ढंग से पकड़ में आ जाने पर यह खंडगत अन्तर्विरोध की वृहद् अन्तर्विरोध के किसी न किसी पहलू का आभास दे जाता है।

2. नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में भारतेन्दु युगीन हिंदी आलोचना पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी आलोचना के विकास पर प्रकाश डालिए।

3. 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' के आधार पर आचार्य रामचंद्र

शुक्ल की आलोचना की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'दूसरा सप्तक की भूमिका' में निहित अज्ञेय के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. हिंदी आलोचना के विकास में नामवर सिंह के योगदान का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

'रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3202 **A**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS-DSE**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (10×3=30)

(क) दूनो एके साथे रहे के परानी ।

देस परदेस में असाम-मुलतानी

संगही में राखऽ चरनों के दासी जानी । परानी...

गवना करा के दसे जइब बिरानी,

P.T.O.

केकरा पर छोड़ि कर टुटही पलानी। परानी...

केकार से आग मागब, केकरा से पानी,

खला-ऊँचा गोड़ परी चढ़ल बा जवानी। परानी...

कहत 'भिखरी' सून होई राजधानी,

पति-मति फेरि द बिंधाचल भवानी। परानी...

अथवा

तोहरे कारनवाँ परानवाँ दुखित बाटे,

दया क के दरसन के दऽ हो बलमुआँ

काइ काइलीं चूकवा कि छोड़लड़ मुलुकबा तूँ

कहलऽ ना दिलवा के हलिया बलमुआँ।

साँवली सुरतिया सालत बाटे छतिया में,

एको नाहीं पतिया भेजलवऽ बलमुआँ।

(ख) कमल से नेत्र नाक सुआ सा चन्दा मुख गोल जिसका

झूठ कदे न बोल्या करता रूप बड़ा अनमोल जिसका

नल जंगल मैं फिरया करैं या, सदा अधर्म तैं डर्‌या करै था।

प्राण खींच तप कर्‌या करैं था, सत में पूरा तोल जिसका।

अथवा

आदर करके पास बिठाले सब पुरवासी आगे
भोजन तक की सोधी कोन्यां आच्छे खेलण लागे।
पति बिन किस तैं करूं जिकर मैं, ऐसा चढगया सांस शिखर मैं।
जिन नैं काल्ह सुणी थी तेरे फिकर मैं वै सारे रात्यूं जागे।

(ग) साँचों सत जंगल का जीव में, देख्यों हे म्हने देख्यो हे।
सत को सांचो पड़छो देख्यो, यो मन म्हरो बेक्यो हे
जैसे पाप की पड़ती छत में, सत को धांबो टेंक्यों हे।
सत को सांच देखी ने, भरभ मन, को हेडी ने फेंक्यो हे।
सत की संगत ने मन जाग्यों, मोह को बंदन छेक्यों हे
गिद्ध पे सती हुई हे गोरदणी, आग में तन सब सेक्यों हे।

अथवा

अरे हां जी सत हम देखंगा सतवंती, पिंगला नार को।
पिंगला का मन में घणों, हे सत को अभिमान
सतवंती का सत की परिक्छा, आज करां परधान
परखा पिंगला नार के, भेटां गरब गुमान
खोटा खरा सोना की जैसे, जवरी करे पेचान
गरब भरी बातां करे, करे घमंड की बात
या तो बात म्हारा मन में खटकी, फिकर होय दिन रात।

P.T.O.

2. लोकनाट्य परम्परा पर विचार करते हुए सांग की अवधारणा स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

ख्याल का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी परम्परा की विवेचना कीजिए।

3. 'भिखारी ठाकुर' का मन संयोग शृंगार की अपेक्षा वियोग शृंगार में अधिक रमा है-बिदेसिया के आधार पर सिद्ध कीजिए। (10)

अथवा

विदेसिया के नाट्य-शिल्प की समीक्षा कीजिए।

4. नल-दमयन्ती सांग में 'नल' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (10)

अथवा

सांग की विशेषताओं के आधार पर नल-दमयन्ती की समीक्षा कीजिए।

5. 'राजयोगी भरथरी' माच की मूल संवेदना लिखिए। (10)

अथवा

'राजयोगी भरथरी' के आधार पर माच के शिल्प का विवेचन कीजिए।

ee

[This question paper contains 4 printed pages.]

Shyama Prasad Mukherji College LIBRARY New Delhi

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3203 **A**

Unique Paper Code : 12057608

Name of the Paper : Hindi Ki Bhashik Vividhtaein

Name of the Course : **Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. हिंदी सिनेमा और मीडिया में व्याप्त क्षेत्रीय हिंदी रूपों के प्रयोग पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

साहित्यिक भाषा के रूप में हिंदी की विविधता पर प्रकाश डालिए ।

2. पाठ्यक्रम में दिए गए पदों के आधार पर कबीर की काव्यगत विशेषताएँ बताइए । (15)

अथवा

अमीर खुसरो की पहेलियों का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. बनारसी दास की आत्मकथा 'अर्ध कथानक' की विशेषताएं और महत्व लिखिए। (15)

अथवा

वर्तमान में गालिब की शायरी की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

4. 'रानी केतकी की कहानी' के कथानक की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'पंचलैट' कहानी की संवेदना लिखिए।

5. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या। (8)

रहे आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या।

जो बिड़े हैं पियारे से, भटकते दर-बदर फिरते।

हमारा यार है हम में, हमन को इंतजारी क्या।

खलक सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है।

हमन गुरुनाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या।

न पल बिछड़े पिया हमसे, न हम बिछड़े पियारे से।

उन्हीं से नेह लगी है, हमन को बेकरारी क्या।

कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से।

जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या।।

अथवा

रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई न हो

हम-सुखन कोई न हो और हम जबा कोई न हो

बे-दरो-दीवार-सा इक घर बनाया चाहिए

कोई हमसाया न हो और पासबा कोई न हो

पड़िए गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार

और अगर मर जाइए तो नौहा-ख्वां कोई न हो।

(ख) रजनी समै मधुर मुख भास। बनिता कहै बानारसी पास। (7)

कंत तुम्हारी कहा बिचार। इहां रहौ कै करो बिहार।।

बानारसी कहै तिय पांहि। हम तू साथ जौनपुर जांहि।।

बनिता कहै सुनहु पिय बात। उहां महा बिपदा उतपात।।

अथवा

गुलरी काकी की बेटी मुनरी के मुँह में बार-बार एक बात आकर मन में लौट जाती है। वह कैसे बोले ? वह जनती है कि गोधन पंचलैट बालना जानता है। लेकिन गोधन का हुक्का-पानी पंचायत से बंद है। मुनरी की माँ ने पंचायत में फरियाद की थी कि गोधन रोज उसकी बेटी को देखकर 'सलम-सलम' वाला सलीमा का गीत गाता है - "हम तुमसे मोहोब्बत करके सलम!" पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस, पंचों को मौका मिला। दस रुपया जुरमाना! न देने से हुक्का पानी बंद। आज तक गोधन पंचायत से बाहर है। उससे कैसे कहा जाए मुनरी उसका नाम कैसे ले ? और उधर जाति का पानी उत्तर रहा है।

(1500)

(8)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3277 **A**

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणा साहित्यिक पद

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. शब्दालंकार और अर्थालंकार का अंतर स्पष्ट करते हुए उपमा अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए। (12)

अथवा

छंद की परिभाषा देते हुए मात्रिक और वार्णिक छंदों के अंतर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. भारतीय काव्य चिंतन में वर्णित काव्य-हेतू विषय पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

गीति काव्य के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

3. जादुई यथार्थवाद की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

संरचनावाद की प्रमुख स्थापनाओं की विवेचना कीजिए।

4. उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

आधुनिकता की प्रमुख स्थापनाओं पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (3×9=27)

(i) स्वछंदतावाद

(ii) लक्षणा शब्द शक्ति

(iii) रस-निष्पत्ति

(iv) नाटक

(v) मानववाद

(vi) त्रासदी

BA(H) Hind VI, Sem., June 2022

(2)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3376 **A**

Unique Paper Code : 12057610

Name of the Paper : Shodh-Pravidhi (शोध-प्रविधि)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (CBCS)**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. शोध के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

हिंदी में शोध की दिशा और संभावनाओं का विवेचन कीजिए।

2. शोध में सत्य और तथ्य की भूमिका की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

P.T.O.

शोध की विभिन्न पद्धतियों का संक्षिप्त विश्लेषण कीजिए ।

3. शोध-कार्य में विषय-चयन के आधार का विवेचन कीजिए । (15)

अथवा

शोध-कार्य में 'तथ्य-विश्लेषण' की भूमिका पर प्रकाश डालिए ।

4. शोध-कार्य के लिए शोधार्थी में कौन-से गुण होने चाहिए ? विश्लेषण कीजिए । (15)

अथवा

शोध-कार्य के दौरान शोधार्थी को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है ? विस्तारपूर्वक बताइए ।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** विषय पर टिप्पणी लिखिए :- (8 + 7)

(क) शोध और आलोचना

(ख) शोध में प्राक्कल्पना

(ग) संदर्भ-सूची निर्माण

(घ) शोध की रूपरेखा

(ङ) शोध में तथ्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3480 **A**

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएं

Name of the Course : **B.A. (H) –Hindi – CBCS**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) "भारतमित्र संपादक! जीते रहो- दूध बताशे पीते रहो। भांग भेजी सो अच्छी थी। फिर बैसी ही भेजना । गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्र में टटोलते हुए 'मोहन मेले' के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आपकी दृष्टि पर अफसोस हुआ । पहली बार आपकी

बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई! आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होना चाहिए, क्योंकि आप संपादक हैं। किंतु आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की-सी निकली जिसने ऊंचे आकाश में चढ़े चढ़े भूमि पर एक गेहूं का दाना पड़ा देखा पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न समझा यहां तक कि उस गेहूं के दाने को चुगने से पहले जाल में फंस गया।"

अथवा

"ग़लतीवश, मोहवश, दुर्भाग्यवश जब से हमने गलितांग को अपना अंग जानकर काट फेंकने से इंकार कर गले से लगाना शुरू किया है, तभी से विष सारे शरीर में व्याप्त हो गया है। अब से पचास-साठ वर्ष पहले अखिल-भारतीय स्तर पर सहस्र-सहस्र ऐसे ब्रह्मराक्षस पैदा हुए थे जिन्होंने कुकर्मों के स्लो-पॉइजन द्वारा मारते-मारते सनातन धर्म को मार ही डाला! इस पूर्णता से वह सनातन धर्म तो अब पुनः जागने-जीने वाला जिसके सराना ब्राह्मण लोग थे। ब्राह्मण-कुल में मैं भी पैदा हुआ हूं। कोई पूछ सकता है कि सनातन धर्म या ब्राह्मण धर्म के इस विनाश पर मेरी क्या राय है।"

(ख) "समस्या यही हैं कि आप अपनी कृतियों को कम-से-कम कितने पुरस्कार पर दान दे सकते हैं? आप की कृतियों के साथ ही उस उत्कृष्ट कवि-हृदय को कोई पुरस्कार तो क्या देगा पर

रायसाहब 'पत्रं-पुष्पं-फलं' से सेवा करने के लिए प्रस्तुत हैं। उनका प्रकाशन-कार्य अभी नया हैं अत: पुरस्कार के मामले में वह एकाएक कलकत्ता और बंबई के प्रकाशकों का मुकाबिला नहीं कर सकते, फिर भी आप जो पुरस्कार उचित समझते हो, लिखें। अविलंब किन शर्तों पर आपकी कृतियों का अधिकार मिल सकता हैं। अवश्य लिखिए।"

अथवा

"इस विचार को अब तक भिन्न-भिन देशों में कितना क्रियात्मक रूप मिल चुका है यह प्रत्येक जिज्ञासु को ज्ञात होगा। पश्चिमीय तथा पूर्वीय जगत देशों में स्त्रियों ने उन बेड़ियों को काट डाला है जिनमें पुरुषों ने बर्बरता के युग में उन्हें बांध कर अपने स्वामित्व का क्रूर प्रदर्शन किया था। उन देशों की महिलाएं राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों ही प्रकार के अधिकारों द्वारा अपनी शक्तियों का विकास कर, गृह तथा बाह्य संसार में पुरुषों की सहयोगिनी बनकर अपने देश और जाति के उत्कर्ष का कारण बन रही हैं, अपकर्ष का नहीं।" (8+7=15)

2. 'जातियों का अनूठापन' निबंध की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'मजदूरी और प्रेम' निबंध की तात्विक विवेचना कीजिए।

P.T.O.

3. 'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' निबंध का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'बैष्णव की फिसलन' निबंध की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'अपनी खबर' आत्मकथा का संक्षिप्त सार प्रस्तुत कीजिए। (15)

अथवा

जीवनी के तत्वों के आधार पर 'निराला की साहित्य साधना' (नए संघर्ष) की समीक्षा कीजिए।

5. 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' यात्रा वृत्तांत की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'सुभान खां पाठ का मूल्यांकन कीजिए।

B.A (Hons) Hindi, VI Sem June 2022